B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I Paper-I

1
4-9-2020

पूंजीवादी प्रणाली में संसाधन आवंटन की समस्या,

Dr S.K. Singh
Deptt of Economics

(RESOURCE ALLOCATION IN CAPITALIST SYSTEM)

प्रत्येक अर्थशास्त्र की अर्थव्यवस्था में साधनों के श्रेष्ठतम आवंटन (optimum allocation of Resources) की समस्या उत्पन्न होती है, क्योंकि प्रत्येक अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधन सीमित होते है, जबकी समाज की आवश्यकताएं अनन्त होती है। अर्थव्यवस्था में साधनो की दुर्लभता के कारण ही संसाधनो के कुशल आवंटन की समस्या उत्पन्न होती है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था के समक्ष यह समस्या उत्पन्न होती है कि उपलब्ध संसाधनो का प्रयोग कौन-कौन सी वस्तुओ का उत्पादन करने के लिए किया जाए? इस तरह संसाधनो के कुशल चयन की समस्या उत्पन्न होती है। पूंजीवादी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में कीमत संयन्त्र (Price Mechanism) स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए साधन आवंटन की समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। कीमत संयन्त्र अपनी मांग एवं पूर्ति की प्रतिस्पर्धात्मक शक्तियों द्वारा वस्तु (अथवा सेवा) की कीमत निर्धारित करता है। और पूंजीवाद की यह स्वतन्त्र कीमत प्रणाली स्वतः ही संसाधनों का कुशल आवंटन कर देती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में कीमत संयन्त्र की सहायता से उपभोक्ताओ की प्राथमिकता को उत्पादको तक पहुंचाया जाता है जिसके आधार पर उत्पादन की मात्रा एवं उसके स्वरूप का स्वतंत्र निर्धारण होता है और तदनुसार समाज के संसाधनो का आवंटन किया जाता है। पूंजीवादी समर्थको का दावा है कि पूंजीवादी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में संसाधनो का विवेकपूर्ण आवंटन सम्भव है, क्योंकि पूंजीवाद का कीमत संयन्त्र स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करते हुए प्रतियोगितात्मक कीमतें निर्धारित करने में सक्षम है।

पूंजीवादी प्रणाली में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता के अनुरूप आर्थिक क्रियाओ को सम्पन्न करने का पूर्ण अधिकार होता है।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)

B.A (Hons) Part-I Paper-II

4-9-2020

भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका,

Dr S. K. Singh
Deptt of Economics

(ROLE OF MNCs IN INDIAN ECONOMY)

(1) औद्योगीकरण में सहायक - बहुराष्ट्रीय निगमों के द्वारा विकासशील देशो के औद्योगीकरण में सहायता पहुँचायी गयी है। जहाँ विकासशील देश पूंजी व तकनीक देने में असमर्थ थे वहां इन बहुराष्ट्रीय निगमों ने भारी मात्रा में पूंजी ही नहीं लगायी है, बल्कि तकनीक भी प्रदान की है जिससे की उन देशो में औधोगिक उत्पादन की नीव ही नहीं रखी है, बल्कि उसके विकास मे भी भारी योगदान दिया है। इन बहुराष्ट्रीय निगमों ने ऐसे उधोगो की भी स्थापना इन विकासशील देशो में की है जिनमे भारी मात्रा में पूंजी व आधुनिक तकनीक की आवश्यकता होती है। जैसे पेट्रोलियम, रसायन, खनिज, आदि। भारत में बरमाह शैल व कालटैक्स पेट्रोलियम के क्षेत्र में इन्ही निगमो की देन थी।

(2) साधनो का विदोहन - भारत में बहुराष्ट्रीय निगमो ने साधनों के बारे मे पता लगाकर उनके विदोहन का कार्य प्रारम्भ किया जिसे भारत उन परिस्थितियों में नही कर सकता था।

(3) उत्पादन तकनीको में परिवर्तन - बहुराष्ट्रीय निगमो ने जब यह पाया कि भारत मे श्रम सस्ता है तो उन्होने उनका लाभ प्राप्त करने के लिए उत्पादन तकनीक में अनेक बार महत्वपूर्ण परिवर्तन किये जिससे कि उत्पादन आधुनिक व अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से प्रतियोगी बन गया जो देश के हित मे ही रहा।

(4) शोध एंव विकास - इन निगमो ने शोध एंव विकास पर पर्याप्त मात्रा में व्यय किया है तथा मुख्य कार्यालय के शोध एंव विकास का लाभ शाखा कार्यालय व सहायक कम्पनियों को भी दिया है जिससे अल्प-विकसित देशो के औधोगीकरण में सहायता मिली है।